'हिजाब' के पीछे का सच

सादिया देहलवी

साल भर पहले की बात है, गोद में बच्चा लिए व सर पर स्कार्फ बांधे एक अफगानी महिला की केलिफोर्निया के फ्रीमाउंट शहर की सड़क पर सरेआम पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। वह औरत मौका-ए-वारदात पर ही मर गई। इस घटना के बाद फ्रीमाउंट में सर पर स्कार्फ बांधकर एक विरोध यात्रा निकली जिसमें शहर की हर मज़हब की महिला शामिल थी। इस घटना से हम समझ सकते हैं कि आज के दौर में हिजाब का अर्थ क्या हो गया है। एक ऐसे विश्व में जहां मुसलमानों को आतंकवाद के साथ जोड़कर देखा जा रहा है, जहां वे नफरत और हिंसा का शिकार हो रहे हैं वहां अनेक जवान मुस्लिम महिलाएं इस्लामी पहचान और विरोध जताने के लिए हिजाब पहन कर बाहर निकल रही हैं।

हिजाब अधिकांश समय औरतों पर चर्चा के साथ जोड़कर देखा जाता है। कुरान के सूरा नूर में स्पष्ट दर्ज है: *हर विश्वास करने वाले पुरुष को चाहिए कि वह अपनी नज़र नीची रखे व मर्यादा का पालन करेः यह उन्हें अधिक पाक बनाएगा क्योंकि अल्लाह जानता है कि वे क्या कर रहे हैं। (कुरान 24:30)*

इसी के फौरन बाद यह भी लिखा है: *हर विश्वास करने वाली स्त्री को चाहिए कि वह अपनी नज़र नीची रखे व मर्यादा का पालन करेः उन्हें अपने ज़ेवर व खूबसूरती की नुमाइश नहीं करनी चाहिए सिवाय उसके जो सहज ही दिखता हो; उन्हें दुपट्टे से अपना सीना ढककर रखना चाहिए तथा अपनी सुन्दरता का प्रदर्शन केवल खाविंद, वालिद, ससुर व बेटों के सामने करना चाहिए। (कुरान 24:31)*

कुरान में यह भी स्पष्ट लिखा है; *मज़हब में कोई ज़बर्दस्ती नहीं होती। (कुरान 2:256)*

एक परम्परा थी जिसका पालन पैगम्बर साहब किया करते थे। वह अपने शिष्यों को हिदायत करते कि वे अपनी औरतों से सर ढकने की गुज़ारिश करें। इस्लाम का आधार खुदा व पैगम्बर साहब के प्रति प्रेम है। और प्रेम में जोर-ज़बर्दस्ती नहीं होती। इस्लाम में सब कुछ नीयत पर आधारित है। अगर आप पूरा दिन भूखे रहें पर आपका इरादा रोज़ा रखने का नहीं है तो आपको उसका सबाव नहीं मिलेगा। इसी तरह अगर एक औरत को हिजाब पहनने पर बाध्य किया जाए, या वह फैशन के लिए स्कार्फ या पगड़ी पहने तो उसे हिजाब नहीं समझा जाना चाहिए। पैगम्बर साहब बेहद कोमल व नर्म दिल थे, वे किसी पर ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं करते थे, फिर चाहे सामने स्त्री हो या पुरुष। उनके साथी जब भी उन्हें एक अच्छे मुसलमान की परिभाषा बताने की गुज़ारिश करते तो वह कहते "वह जिसका चरित्र पाक हो"। पैगम्बर की शिक्षा का मूल मंत्र था अपने अंतर्मन को प्रेम और कोमल बनाने की नियमित कोशिश।

एक औरत को अपना पहनावा चुनने की आज़ादी होनी चाहिए। फ्रांस में विद्यार्थियों के स्कार्फ पहनने पर प्रतिबंध लगाना उतना ही दमनकारी व गलत है जितनी तालीबान का औरतों को पर्दे में रखने की ज़बर्दस्ती। पिछले वर्ष जर्मनी के सात राज्यों में शिक्षिकाओं के हिजाब पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। तुर्की में सार्वजनिक संस्थानों व सरकारी कर्मचारियों के हिजाब पहनने पर रोक है। इन सभी मामलों में औरत पर ज़बर्दस्ती व उसका प्रतीक के रूप में इस्तेमाल इस्लाम को पाक बनाने या उसे दकियानूसी

करार देने के लिए किया गया है। कुछ यूरोपीय देशों ने खुलेआम हिजाब को कट्टरवाद और अतिवाद का प्रतीक कहा है। दुनिया भर में मुस्लिम समाज हिजाब के विरोध को मुसलमानों के ख़िलाफ़ साज़िश के रूप में देखता है।

मिस्र से लेकर ईरान, इंडोनेशिया के मुस्लिम समाज में अनेक व्यवसायरत महिलाएं हिजाब पहनती हैं। यह उनका अपना चुनाव है और इसे दमन या ज़बर्दस्ती के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। हिजाब कई क्षेत्रों में संस्कृति व परम्परा का प्रतीक है। ग्रामीण भारत में आज भी अधिकांश औरतें अपना सर ढकती हैं चाहे वे किसी भी धर्म को मानती हों। भारत के मुस्लिम आबादी वाले इलाकों में जहां उन्हें शिक्षा या रोज़गार के अवसर नहीं मिल पाते वहां उनका विश्वास ही उनका इकलौता सहारा होता है और इसलिए उस विश्वास के प्रतीकों से वे खुद को बांधकर रखती हैं। शहरों में आजकल फैशन की परकाष्ठा दिखाई पड़ती है जिसमें आधुनिकता का अर्थ पश्चिमीकरण समझा जाता है। फ़िल्म व दूरदर्शन इस भुलावे को और अधिक बढ़ावा देते हैं। मेरी दादी-नानी बुर्का पहनती थीं परन्तु उनके विचार बेहद प्रगतिशील थे। मेरे अनेक नाते-रिश्तेदार हैं जो आर्किटेक्ट, डॉक्टर, वकील हैं और सर पर स्कार्फ बांधती हैं परन्तु यह उनकी अपनी मर्ज़ी है कोई दबाव का हिस्सा नहीं।

भारतीयों में जो मुझे बेहद अफसोसनाक लगता है वह है कि हम अपनी संस्कृति को भूलते व नकारते जा रहे हैं परन्तु आधुनिकता के पश्चिमी कायदों को आंख बंद करके अपना रहे हैं। अर्धनग्न रैंप पर चलती हुई मॉडल यह साबित करने की होड़ में लगी है कि भारत का दुनिया के नक्शे पर एक महत्वपूर्ण दर्जा है। और जो औरतें अपने जिस्म को ढककर रखती हैं या रखना चाहती हैं उन्हें हम रूढ़िवादी व दकियानूसी ठहरा रहे हैं।

यह बेहद अफसोसनाक है कि मीडिया भी मुसलमानों के प्रति पश्चिमी शब्दावली, अभिव्यक्ति व पूर्वग्रह अपना रहा है। वह भी पश्चिमी चलन का अनुसरण करके मुसलमानों को बेकार के मुद्दों में उलझाकर रखना चाहता है। खुद को मुस्लिम समुदाय का सरपरस्त समझने वाले नेताओं से सनसनीखेज़ खबरें बटोरकर मुस्लिम महिलाओं की रूढ़िवादी छवि को चर्चा का विषय बनाया जा रहा है। इस तरह की गैर ज़िम्मेदाराना सोच भारतीय मुसलमानों के सामने मुंह बाये खड़े गंभीर शैक्षिक, आर्थिक व ढांचागत भेदभाव के मुद्दे को दरकिनार व नज़रअंदाज़ कर देती है। मीडिया को चाहिए कि वह इस सवाल पर तवज्जो दे कि भारत अपने मुस्लिम नागरिकों को उनके जायज अधिकार प्रदान करने में कहां चूक गया है? और इस समुदाय का हर क्षेत्र में इतना कम प्रतिनिधित्व क्यों दिखाई पड़ता है? हमें अपनी ऊर्जा व ध्यान यथोचित सुधार प्रयासों में लगाना होगा।